यूसुफ तथा अन्यों ने परमेश्वर का स्वतंत्र करने वाला अनुग्रह प्राप्त किया

बालकों के शिक्षकः बालकों का अध्ययन जी 3 बी पढ़ें

प्रार्थनाः "स्वर्ग में हमारे पिता, यीशु, पतरस तथा पौलुस की तरह दृढ़ता से खड़े होने में हमारी सहायता करें, जिन्होंने इन्सानों तथा रीति रिवाज़ो का विरोध किया, जो आपके असीम अनुग्रह के स्वतन्त्र बहाव में रूकावट डालते थे।"

1. अपने हृदय को परमेश्वर के वचन के साथ, हमारे प्रभु के स्वतन्त्र अनुग्रह के लिये तैयार करें।

नया नियम कहता हैः	**धार्मिक रिवाज़ कहते हैंः**
अनुग्रह अयोग्य पापियों के लिए जो विश्वास करते हैं, परमेश्वर की क्षमा तथा अनन्त जीवन का वरदान है। रोमियो 5:8-21 में अनुग्रह का एकमात्र स्रोत देखें।	"अगर अनुग्रह मुफत हो तो मसीही सोचेंगे कि वो जो चाहें कर सकते हैं तथा पाप करते रहेंगें।" रोमियो 6:1-14 में देखें अगर यह सत्य है।
परमेश्वर की भलाई पापियों को पश्चाताप की ओर ले जाती है, रोमियो 2:4 तीतुस 2:11-15 में देखें, कि अनुग्रह विश्वासियों को क्या करने की ओर ले जाता है।	"धार्मिक मार्गदर्शको को अनुशासन बनाने के लिये कड़े नियमों को लागू करना चाहिये, तथा बाईबल के अतिरिक्त मनुष्य निर्मित नीतियों से समुदायों को नियांत्रित करना चाहिये।"
मुक्ति विश्वास के द्वारा अनुग्रह से है। इफिसियों 2:8-10 में देखें कि क्या कर्मो के परिणाम स्वरूप हमारा उद्धार होता हैया उद्धार का परिणाम, अच्छे कार्य है।	"मुक्ति अच्छे कार्य चाहती है। अगर तुम मेरे द्वारा निषेध किए गए किसी भी आंनन्द को करते हो तो तुम असुरक्षित हो।"

उत्पत्ति के अध्यायों 37 तथा 39-45 में यूसुफ की कहानी पढ़ें। उदाहरण देखें, कि कैसे मसीह उनको क्षमा करता है जो उसके विरूद्ध पाप करते थे, जब वे पश्चाताप करते हैं। यूसुफ, यीशु से कई प्रकार से समानता रखता थाः

उसका पिता उससे प्रेम करता था। उसके भाईयों ने उसे अस्वीकार किया तथा बेच दिया। वो अन्यायपूर्णता से दंडित हुआ। वो शक्तिशाली स्थान पर उठाया गया। उसने उन्हें क्षमा किया जिन्होंने उसे नुकसान पहुँचाया था।	उसने अपने भाईयों के लिए मध्यस्थता की। उसने एक भोज में अपने आप को प्रकट किया। (हम एक भव्य भोज में यीशु का मुख देखेगें। प्रकाशितवाक्य 19:6-9, 1 यूहन्ना 3:2) उसने उन्हें रहने के लिये एक अच्छी भूमि दी।

2. सहकर्मियों के साथ अगले सप्ताह की कामों को योजना बनायें।

ऐसे विश्वासियों तथा चरवाहों से भेंट करें, जो धार्मिक नियमों से बंधे हुए है, तथा उन्हें अनुग्रह के विषय में समझायें।

3. सहकर्मियों के साथ आगामी आराधनाकाल की योजना बनायें। (आवश्यक्ताओं के अनुरूप विषय चुनें)

युसुफ की कहानी बतायें तथा समझायें कि उसका जीवन किस प्रकार कई तरीकों से यीशु का अनुग्रह

दर्शाता था।

धार्मिक परंपराओ से "सात स्वतन्त्रतायें" समझायें। हमें एक स्वस्थ सामुदायिक जीवन का आंनद लेने के लिये इन स्वतन्त्रताओं का अभ्यास करना चाहिये तथा मसीह के लिये एक व्यापक आंदोलन संभव बनाना चाहिये।

- एक चिन्ह (इश्तहार) बनायें जिस पर "श्रीमान परम्परा" पढ़ा जाये तथा किसी से उसकी भूमिका लेने को कहें।
- समझायें कि "श्रीमान परंपरा" मनुष्य निर्मित प्रतिबंधों को लागू करता है। वो हर जगह है! जब आप हरएक स्वतन्त्रताओं को पढ़ चुकेगें, तो श्रीमान परंपरा आपसे बहस करेगा। लोगों से कहें, कि उसका संशोधन करें।

1) **उसको करने की स्वतन्त्रता जो कुछ भी यीशु ने आज्ञायें दी तथा उसके प्रेरितों ने अभ्यास किया।** उसकी आज्ञाओं में शामिल हैं विश्वासियों को परमेश्वर के मुफत अनुग्रह तथा क्षमा के प्रति आश्वस्त करना, बिना मनुष्य निर्मित अपेक्षाओं के द्वारा उनका बपतिस्मा करना, तथा जहाँ भी विश्वासी एकत्रित हों, वहाँ पर प्रभु भोज का उत्सव मनाना।

श्रीमान परंपरा अपना चिन्ह दिखाता है तथा अपने शब्दों में बहस करता है, "केवल याजकवर्ग ही बपतिस्मा दे सकता है तथा प्रभु-भाजे प्रस्तुत कर सकता है। बपतिस्मे के इच्छुक प्रार्थियों के पहले पानी पर चलकर यह प्रमाणित करना होगा कि वे पवित्र है।"

विश्वासियों से कहें, कि श्रीमान परंपरा का संशोधन करें। फिर समझायें कि हम मनुष्य से पहले यीशु की आज्ञा का पालन करते हैं।

- प्रेरितों के काम 2:38-47 में येरूशलेम में पहले विश्वासियों ने प्रारम्भ से ही यीशु को मानना शुरू कर दिया था।
- हम उसकी आज्ञाओं को 7 अभ्यासों में संक्षेपण कर सकते हैं, जिनका प्रेरितों के काम 2 में 3000 नए विश्वासियों ने पालन किया था।
- उन्होंने पश्चाताप किया तथा पवित्र आत्मा को ग्रहण किया, बपतिस्मा पाया, प्रभु भोज खाया, एक दूसरे से प्रेम किया जैसा उनके भाईचारे में देखा गया, प्रार्थना करी, दान दिया तथा अनुयायी बनाये।
- मत्ती 28:18-20 में जो यीशु ने कहा उसे पूछे, जो उसकी आज्ञाओं को सब मानव के नियमों के ऊपर रखता है।

2) **खोजियों के घरों में प्रवेश की, तत्काल उनके घरों में नए समुदायो को प्रांरभ करने तथा उन्हें उपदेश देने की, उनके परिवारों तथा सभ्यताओं के मध्य कार्य करने की स्वतन्त्रता।**

- **श्रीमान परंपरा** असहमत होता है। "नए विश्वासियों को तुरन्त मित्रों के बुरे प्रभाव से अलग करें। एक कलीसिया को दूसरी कलीसिया प्रारम्भ करने के लिये कई वर्षो तक परिपक्व होना चाहिये। उसको हमारे क्षेत्रीय कार्यलय से अनुमति लेने की आवयश्कता है तथा काफी सदस्यों की, जो नए पादरी का वेतन दें।"
- विश्वासियों से कहें, कि श्रीमान परंपरा का संशोधन करें। फिर समझायें कि हमें पारिवारिक तंत्रो के मध्य ही कार्य करना चाहिये। यीशु तथा उसके प्रेरित अकसर लोगों के घरों में जाते थे तथा उनके साथ भोजन करते थे। वो तुरन्त खोजियों के परिवारों तथा मित्रों के साथ व्यवहार करते थे। वे जहाँ कहीं भी गए उन्होंने नए समुदाये बनाये बिना चाहे कि समुदायों के पास भवन हों या फिर वे वेतन दे सकें।

3) एक दूसरे की सेवा करने की, स्वतन्त्रता उतने छोटे समूहों में कि सदस्य एक दूसरे से बात कर सकें (1 कुरिन्थियों 14:24-26)

- श्रीमान परंम्परा विवाद करता है "हमें हर चीज़ को शालीनता तथा अनुशासन में करना चाहिये। अनुशासन वो है, जो मैं खुद कहता हूँ! केवल शिक्षित याजकवर्ग को ही सार्वजनिक सभाओं की अगुवाई करनी चाहिये।"
- विश्वासियों से कहें, कि श्रीमान परंपरा का संशोधन करें। फिर समझायें कि परमेश्वर हमें हमारे विभिन्न आत्मिक वरदानों के द्वारा एक दूसरे की सेवा करने की आज्ञा देता है। हमें बात करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिये तथा समूह इतने छोटे रखने चाहिये कि हर एक अपनी बात कह सके।

4) ऐसे मार्गदर्शकों के नामांकन की स्वतन्त्रता जो परमेश्वर की माँगों को पूरा करते हो, वेतन सहित या रहित।

- श्रीमान परंपरा बहस करता है, "हमारी कलीसिया पादरियों को संधदीक्षित होने की माँग करती है। हमारी नीति पुस्तक में 734 माँगो की सूची है जो उन्हें पहले से पूरी करनी है, पेशेवर शिक्षा की उपाधियों समेत।"
- विश्वासियों से कहें, कि श्रीमान परंपरा का संशोधन करें। फिर समझायें कि पौलुस ने प्राचीनों का नए समुदायों के मार्गदर्शन के लिये नामांकन किया था तथा उन्हें परामर्श दिया था, प्रेरितों के काम 14:23। उसने तीतुस से वहीं करने को कहा था, तीतुस 1:5-9।

5) विभिन्न तरीकों से कार्य करने की स्वतन्त्रता, बिना पुरानी कलीसियाओं के अभ्यासों की नकल करे।

- श्रीमान परंपरा असहमत होता है: "हमें उन्हीं तरीकों का प्रयोग करना चाहिये, जिनको मैं खुद अनुमोदित करता हूँ। मसीह में एकता की माँग यह है, कि हमें एक जैसे अभ्यासों के अनुरूप होना चाहिये। हमें वचन का एक जैसे तरीके से ही उपदेश देना चाहिये। परमेश्वर पुलपिट पर स्र्वोच्च गुण्वत्ता तथा श्रेष्ठता चाहता है।"
- विश्वासियों से कहें, कि श्रीमान परंपरा का संशोधन करें। फिर समझाऐं कि हम कई तरीकों का प्रयोग कर सकते हैं, जैसे यीशु तथा प्रेरितों ने किया था, तथा हर समूह के आकार, उसके मार्गदर्शकों की परिपक्वता तथा स्थानीय रिवाज़ों के आधार पर उसको रूपांतरित कर सकते हैं।

6) मार्गदर्शकों के प्रशिक्षकों की प्रतिक्रिया के लिये स्वतन्त्रता, जो उनके नए झुँड की तत्काल सहायता के लिये आवश्यक हो।

- यीशु ने कहा था कि एकज्ञानी शिक्षक नई तथा पुरानी चीज़े प्रस्तुत करता है, मत्ती 13:52 हमें नए मार्गदर्शकों को विकल्प देने चाहिये ताकि वो उन शिक्षाओं को चुन सकें जो उनके झुँड की वर्तमान आवश्यक्ताओं के लिये उपयुक्त हो।

  श्रीमान परंपरा दृढ़तापूर्वक कहते हैं, "मेरे प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक निर्धारित पाठ्यक्रम है। हर विद्यार्थी एक जैसी शिक्षा पाता है, जो एक ही स्थान से प्रारम्भ होती है तथा एक ही मार्ग की ओर जाती है। वो भविष्य में उस सब को लागू करेगें, स्नातक होने तथा दीक्षा लेने के पश्चात तक।"
- विश्वासियों से कहें, कि श्रीमान परंपरा का संशोधन करें। फिर समझायें कि यीशु ने वर्तमान परिस्थितयों तथा तत्काल आवश्यकताओं की प्रतिक्रिया में शिक्षा दी। पौलुस ने तीतुस को त्रेते के नए समुदायों की कमियों के साथ व्यवहार करने को कहा। नए समुदयों में अकसर भिन्न आवश्यकताऐं होती हैं।

7) किसी भी क्षेत्र में तीतुस जैसे समन्वयकों को उपलब्ध कराने की स्वतन्त्रता, जो नए समुदायों का निरीक्षण करें तथा चरवाहों को प्रशिक्षित करें, जैसे पौलुस ने तीतुस को निर्देश दिया था, तीतुस 1:5 में।

- श्रीमान परंपरा बहस करते हैं: “नए समुदायों को अपने आप को स्वंय नियंत्रित करना चाहिये, बिशप को छोड़कर जो हर पाँच साल में उनसे भेंट करते हैं। अगर किसी को नई कलीसियाओं का निरीक्षण करना ही चाहिये, तो मैं खुद करूँगा।”
- विश्वासियों से कहें, कि श्रीमान परंपरा का संशोधन करें। फिर समझायें कि नए समुदायों की, नवजात शिशुओं की तरह तात्कालिक आवश्यकतायें होती है तथा उनको पुराने समुदायों तथा मार्गदर्शकों की सहायता की आवश्यकता होती है। पौलुस ने क्रेते में तीतुस को हरएक समुदाय में चरवाहक प्राचीनों के नामांकन के लिये छोड़ा था जो कि उनकी कमियों को देखें तथा उचित व्यवहार करें।

बालकों से कहें, कि वे अपव्ययी पुत्र के विषय में अपना नाटक प्रस्तुत करें। वे एक कविता सुना सकते हैं तथा व्यस्कों से नाटक के विषय में प्रश्न पूछ सकते हैं। सहायकों से ज़क्कई की कहानी लूका 19:1–10, तथा पविन स्त्री की कहानी लूका 7:36–50 में से एक या दोनों को बताने को या अभिनीत करसे को कहें। कहानी सुनाने के पश्चात, लोगों से पूछे कि वह यीशु के अनुग्रह को कैसे दर्शाती है। विश्वासियों से गवाही देने को कहें, कि कैसे परमेश्वर का क्षमाशील अनुग्रह उन तक पहुँचा।

यूहन्ना 1:14 स्मरण करें। याद करें, कि वो क्या था जिसने यीशु को भर दिया था।